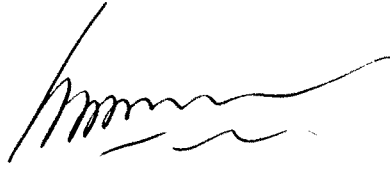


प्रमाण-पत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री. रामचंद्र जिक्खा केसरकर ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिये प्रस्तुत लघु-शाोध प्रबन्ध ' कबीर के काव्य में अभिव्यक्त समाज-दर्शन ' मेरे निर्देशन में पूरे परिश्रम के साथ सफलता पूर्वक पूर्ण किया है । संपूर्ण लघु-शाोध-प्रबन्ध को आरंभ से अंत तक पढकर ही मैं यह प्रमाण-पत्र दे रहा हूँ । श्री. रामचंद्र जिक्खा केसरकर के प्रस्तुत शाोध-कार्य से मैं संतुष्ट हूँ ।



(प्रा. शरद कणबरकर)

शाोध-निर्देशक

हिन्दी विभाग

शिवाजी विश्वविद्यालय

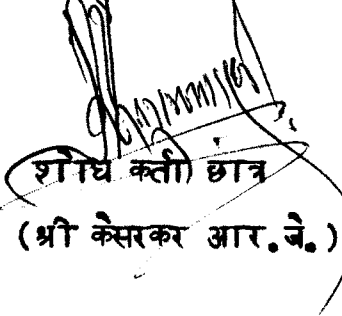
कोल्हापुर ।

दिनांक : 24/2/1990 ।

प्रख्यापन

मैंने 'कबीर के काव्य में अभिव्यक्त समाज-दर्शन का महत्व' लघु-शाोध-ग्रन्थ प्रा. शरद कणबरकर जी के निर्देशन में शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्. फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए पूरा किया है। मेरा यह मौलिक शाोध-कार्य है। यह लघु-शाोध-ग्रन्थ इस विश्वविद्यालय की या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए मैंने प्रस्तुत नहीं किया है।

दिनांक : २८/१२/१९९० ।
कोल्हापुर ।


शाोध कर्ता छात्र
(श्री केशरकर आर.जे.)

अनुक्रमणिका

	<u>पृष्ठ क्रमांक</u>
प्राक्कथन	१-४
अध्याय पहला - कबीर का जीवन परिचय ।	१-१६
अध्याय दूसरा - कबीर कालीन सामाजिक परिस्थिति ।	१७-३२
अध्याय तीसरा - कबीर बाणी में प्राप्त समाज-दर्शन ।	३३-१३६
अ) कबीर का धर्माचरण संबंधी चित्रण । विचार और आचार-कर्मकाण्ड- बाह्याचार ।	
आ) नारी - भावना ।	
इ) गृहस्थ और संन्यास धर्म ।	
ई) अनिष्ट प्रथा और परंपराओं की आलोचना ।	
अध्याय चौथा - कबीर के काव्य में अभिव्यक्त समाज - दर्शन का महत्व ।	१३७-१५७
उपसंहार	१५८-१६४
संदर्भ ग्रन्थ सूची	१६५-१६८

प्राक्कथन

प्राक्कथन

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य का अध्ययन करते हुए मेरा मन हिन्दी सन्त साहित्य ने आकर्षित किया । हिन्दी साहित्य के नभांगण को अपने काव्य से आलोकित करनेवाले एक सितारे की ओर मैं अपने आप आकर्षित हुआ, जिसके काव्य में सूर्य-प्रकाश जैसी स्पष्टता, चन्द्र प्रकाश जैसी मोहकता और शुक के तारे जैसी आह्लाददायकता मैं अनुभव की । वह सन्त भक्त कवि था कबीर । उस पर विशेष अध्ययन करते हुए अपनी विशेष दीप्ति से समाज को मार्गदर्शन करनेवाले 'कबीर के काव्य में अभिव्यक्त समाज दर्शन' इसी विषय को लघु-शाब्द-प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत करने का विचार मन में घर कर बैठा । यही विचार मैं हमारे प्रिय, समाजप्रिय और विद्यार्थियों को खास करके हिन्दी साहित्याध्ययन में प्रोत्साहित करनेवाले मार्गदर्शक प्रा.शरद कणवरकर जी से चर्चा की । उन्होंने अनुमति तो दे ही दी, इतना ही नहीं, बल्कि मेरे विचारों को एक सुनिश्चित दिशा में मार्गदर्शन भी किया ।

प्रस्तुत विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में बिम्ब प्रश्न उठे ---

- (१) सन्त कबीर के जीवन का गहराई के साथ परिचय प्राप्त किया जाय ।
- (२) कबीर-कालीन सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक परिस्थितियों का पता लगा लिया जाय जो समसामयिक साहित्य को प्रभावित करती हैं ।

- (३) कबीर-बाणी में अभिव्यक्त समाज-दर्शन के अंतर्गत धर्माचरण संबंधी चित्रण किस प्रकार किया गया है ? तत्कालीन समाज में आचार-विचार का चित्रण कैसा किया गया है ? तथा कबीरदास ने कर्मकाण्ड और बाह्याचार के संबंध में अपने विचार किन शब्दों में प्रकट किये हैं ?

कबीरदास ने नारी के संबंध में भले-बुरे विचार किस प्रकार व्यक्त किये हैं ?

गृहस्थ और संन्यास धर्म के बारे में कबीरदास के विचार कैसे थे ?

सामाजिक अनिष्ट प्रथाओं और गलत परंपराओं की आलोचना कबीरदास ने किन शब्द-बाणों से की है ?

- (४) और कबीर के काव्य में अभिव्यक्त समाज-दर्शन का महत्व तत्कालीन परिस्थिति में क्या था ? और आज भी कबीर के समाज-दर्शन का महत्व क्या है ?

मेरे प्रश्नों के उत्तर पाने के लिए मैं अपने लघु-शाोध-ग्रन्थ की निम्न प्रकार रनपरेक्षा बनायी और काम में जुट गया ।

अध्याय पहला --

कबीर का जीवन परिचय ।

अध्याय दूसरा --

कबीर-कालीन सामाजिक परिस्थिति ।

अध्याय तीसरा --

कबीरबाणी में प्राप्त समाज-दर्शन --

(अ) कबीर का धर्माचरण संबंधी चित्रण । विचार और आचार-
कर्मकाण्ड-बाह्याचार ।

(आ) नारी - भावना ।

(इ) गृहस्थ और संन्यास धर्म ।

(ई) अनिष्ट प्रथा और परंपराओं की आलोचना ।

अध्याय चौथा --

कबीर के काव्य में अभिव्यक्त ' समाज-दर्शन ' का महत्व ।

उपसंहार --

और मुझे यह स्पष्ट करने में बड़ा आनन्द होता है कि इन प्रश्नों के उत्तर ढूँढ निकालने में मेरे प्रिय गुरुन प्रा. शरद कणवरकर जी से संतोषापूर्ण मार्गदर्शन मिला ।

सम्बन्धित विषय की व्याप्ति कितनी विस्तृत है यह स्पष्ट करने की जरूरत है ही नहीं । केवल विषयज्ञान सुस्पष्ट होने के लिए ही इस प्रकार से मैं रचना की है ।

विषय का विचार करने के बाद जो निष्कर्ष हाथ लगे वे उपसंहार में रखे हुए हैं । और अन्त में संदर्भ ग्रन्थों की सूची भी जोड़ दी है ।

अहिन्दी भाषाी छात्र होते हुए भी मुझे अपने इस कार्य में श्रद्धेय गुरुनदेव प्रा. शरद कणवरकर जी का अध्ययन संपन्न पथप्रदर्शन बहुत बड़ा सहायक साबित हुआ है । अपनी व्यस्तताओं के बावजूद श्रद्धेय प्रा. शरद कणवरकर जी ने एक सफल निर्देशक के रूप में मुझे जो मार्गदर्शन किया है उस ऋण से उऋण हो पाना केवल असंभव है । प्रस्तुत लघु-शाोध-ग्रन्थ के गुण आप के और तृणियाँ मेरी हैं ।

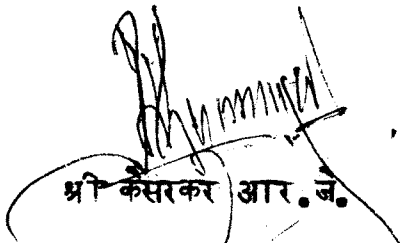
घरेलू ग्रामीण वातावरण एवं अनेक आपत्तियों के कारण एम. फिल. की उपाधि पाना मेरे लिए नामुमकिन था, लेकिन वात्सल्यभरी प्रेरणा देनेवाले और साहित्याध्ययन में प्रोत्साहित करनेवाले श्रद्धेय प्राचार्य गुरुनदेव डा. व्ही. डी. कटाखले और मेरे मित्र अध्यापक श्री. जी. एम. कंक जी ने मुझे उत्साहित किया ।

सब लोगों का स्नेहभरा योगदान न मिलता तो मैं प्रस्तुत शाोध-कार्य में सफल न हो पाता । जिन सुहृदों ने इस संशोधन कार्य में मेरी सहायता की है , उन सब के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

मुझे अपने संशोधन कार्य में निरंतर प्रेरणा देनेवाले और अपनी ओर से सक्रीय सहयोग देनेवाले मेरे पथप्रदर्शक श्री विजयसिंह पाटील, श्री.ए.बी.गगदाणी आदि को मैं धन्यवाद देता हूँ । साथ ही कोल्हापुर हायस्कूल,कोल्हापुर के मुख्याध्यापक श्री.एस.डी. पुजारी, ज्यू कॉलेज,शहाजी छत्रपति महाविद्यालय, शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रन्थपाल, प्राचार्य एवं सभी कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ । टंकलेखनिक श्री बाळकृष्ण रा. सावन्त ,कोल्हापुर ने उत्तम टंकलेखन कर और राजहंस प्रेस, कोल्हापुर ने समय पर उत्तम बाइंडिंग कर दिया इसलिए मैं उनका भी आभारी हूँ ।

श्रद्धेय डा.व्ही.के.मोरे जी ,डा.द्रवीडजी,प्रा.रजनी भागवत तथा प्रा. तिवले जी का आशीर्वाद मेरी अनेकों समस्याओं में सहायता और सफलता देता रहा है । भविष्य में भी इन सब गुरुजनों से आशीर्वादमयी योगदान की कामना करते हुए समादरणीय समीक्षकों के सामने प्रस्तुत लघु-शाोध-ग्रन्थ अवलोकनार्थ प्रस्तुत करता हूँ ।

कोल्हापुर ।
२८ फरवरी , १९९० ।


श्री.कैसरकर आर.जे.